अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद

कार्यालय - युवालोक, जैन वि-व भारती, लाडनूं (राज.)
म.उंपस रू जमतंचंदजीउमकपं/लींववण्बवण्पद

साध्वी प्रमुखा का 38वां चयन दिवस

स्तुति नहीं, गुणों को जीवन में उतारें

आचार्य महाप्रज्ञ

बीदासर, 23 जनवरी, 2009

सूर्योदय के बाद कस्बे के तेरापंथ भवन में राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में मंगल गीतों की स्वर लहरियां गूंज रही थी। अवसर था साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा के 38वें चयन दिवस का। गंगाशहर की पावन धरा पर विक्रम संवत 2028 को अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने साध्वी कनकप्रभा को साध्वी प्रमुखा पद पर प्रतिष्ठित किया था। श्रीमद् मघवा समवसरण में उनके चयन दिवस पर साधु-साध्वियों ने मंगल गीतों से स्तुति की।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि मुझे स्तुति में कम विश्वास है। व्यक्ति की केवल स्तुति ही नहीं होनी चाहिए। उसके गुणों को अपने जीवन में उतारने का संकल्प भी होना चाहिए। साध्वी प्रमुखा ने अपनी योग्यता का विकास किया। इसमें क्षमता है। इस क्षमता और योग्यता के कारण ही साध्वी प्रमुखा बनाया गया। साध्वी प्रमुखा प्रबुद्ध है, निर्लेप है, लेखन में दक्ष है, वक्ता है। इसके भीतर विनम्रता, साहिष्णुता, वैराग्य और साधुता के प्रति निष्ठा है। इन सर्व योग्यताओं को सभी अपने भीतर उतारने का संकल्प करें, जिससे इनकी स्तुति करना सार्थक होगा।

उन्होंने कहा कि आचार्य तुलसी द्वारा जो भी कार्य किया जाता था उस सन्दर्भ में होने वाले चिंतन से मैं कभी अलग नहीं रहा। उन्होंने कहा कि योग्य साध्वी प्रमुखा न हो तो बड़ी कठिनाई होती है। योग्यता की कसौटी में साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा सौ प्रतिशत ही नहीं 125 प्रतिशत खरी उतरी। उन्होंने योग्यता की व्याख्या करते हुए कहा कि आचार कौशल, व्यवहार कौशल और मर्यादा कौशल इन कौशल युक्त योग्यता को बढाने वाला ही महानता के पथ पर बढ़ सकता है। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि सभी साध्वियां साध्वी प्रमुखा बनने की योग्यता को विकसित करें, पर उम्मीदवार कोई नहीं बने।

युवाचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि श्रीमद् जयाचार्य के प्रति आदर के भाव उभर रहे हैं। उन्होंने दूरदृष्टि के द्वारा साध्वी प्रमुखा की व्यवस्था दी। इस पद की उस समय जितनी जरूरत थी उससे भी ज्यादा आज जरूरत है। उन्होंने कहा कि तेरापंथ में सत्ता का सम्पूर्ण केन्द्र आचार्य होते हैं। पर इतने बड़े समुदाय की समुचित व्यवस्था में कार्यों का योग्यता के अनुसार विभाजन किया जाता है। साध्वी प्रमुखा जी ने संघ की बहुत सेवा की है। इनकी कार्य दक्षता, श्रमशीलता सराहनीय है। अभी आचार्य प्रवर द्वारा नवीन सर्जित मुख्य नियोजिका पद पर साध्वी विश्रुतविभा अच्छी तरह से कार्य कर रही है।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने सबकी मंगलकामना स्वीकार करते हुए कहा कि मैं गुरुदेव तुलसी से आशीर्वाद चाहती हूं कि मेरे चारों ओर ज्योति बिखरती रहे। यही आशीर्वाद आचार्य श्री महाप्रज्ञ से मांग रही हूं। क्योंकि महाप्रज्ञ में तुलसी का दर्शन कर सकते हैं। मेरे मन तक सूर्य चन्द्रमा और तारों का प्रकाश नहीं पहुंचता है। आपके आशीर्वाद से वह प्रकाशवान होता रहे। उन्होंने आचार्य प्रवर से निवेदन करते हुए कहा कि आपके दृष्टि के अनुसार अपना निर्माण कर सकूं ऐसी शक्ति दिरावें और हमेशा संघ सेविका के रूप में संघ की सेवा करती रहूं।

मुनि सुमेरमल लाडनूं ने संत समुदाय की तरफ से बधाई दी। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा ने सृजनऔत बताया। मुनि श्रेयांस एवं मुनि पीयुश ने गंगाशाहर की धरा की तरफ से मंगलकामना की। संत समुदाय ने ''आज बधाई देते, भैक्षवगण के तारे'' गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी विमलप्रज्ञा के नेतृत्व में बीदासर की साध्वियों ने गीत के माध्यम से साध्वी प्रमुखा की विशेषताओं का वर्णन किया। समणीवृंद ने मंगल गीत की प्रस्तुति दी।

संस्औत भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

बीदासर 23 जनवरी, 2009।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ के इंगितानुसार युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में साधु-साध्वियों की संस्औत भाषण प्रतियोगिता का दूसरा चरण आयोजित हुआ। प्रतियोगिता में मुनि प्रशम कुमार, मुनि विश्रुत कुमार, मुनि गौरव, मुनि सुखलाल, मुनि महावीर, मुनि नयकुमार, मुनि अक्षय प्रकास, मुनि धन्यकुमार, बाल मुनि मृदुकुमार, साध्वी कल्याणयशा, साध्वी सिद्धांतश्री, साध्वी समन्वयप्रभा, साध्वी मंजुरेखा, समणी अमितप्रज्ञा, समणी काव्यप्रज्ञा, समणी पुनीतप्रज्ञा ने संस्औत भाषण की प्रस्तुति दी। नचिकेता बाल मुनि मृदुकुमार की प्रस्तुति सबके आकर्षण का केन्द्र रही।

इस अवसर पर युवाचार्य महाश्रमण ने सबके प्रयासों की सरहाना करते हुए कहा कि तेरापंथ में संस्औत का अच्छा विकास हुआ है। संघ में अनेक साधु-साध्वियां संस्औत के विद्वान हुए हैं। आचार्य महाप्रज्ञ जैसे संस्औत के पंडित होना बहुत बड़ी बात है। आचार्य श्री ने संस्औत की अनेक विद्याओं में महारत हासिल की। उन्होंने कहा कि आने वाली पीढी अपने प्रयासों में कमी न आने दें और संस्औत भाषा को तैजस्वी भाषा के रूप में बना दें जिससे संस्औत भाषा जीवंत रह सकेगी।

- अशोक सियोल

9982903770